फरीदाबाद

मजदूर समाचार

राहें तलाशने–बनाने के लिए मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान–प्रदान के जरियों में एक जरिया

अन्तरिक्ष अभियान सरकारों के सैन्य अभियान हैं। नियन्त्रण - जकड़ कसने के लिये स्थापित किये जाते हैं अन्तरिक्ष में उपग्रह। अधिक व तीव्रतर शोषण के लिये हैं अन्तरिक्ष अभियान।

नई सीरीज नम्बर 177 मार्च 2003

आप-हम क्या-क्या करते हैं... (3)

अपने स्वयं की चर्चायें कम की जाती हैं। खुद की जो बातें की जाती हैं वो भी अक्सर हाँकने- फाँकने वाली होती हैं, स्वयं को इक्कीस और अपने जैसों को उन्नीस दिखाने वाली होती हैं। या फिर, अपने बारे में हम उन बातों को करते हैं जो हमें जीवन में घटनायें लगती हैं – जब- तब हुई अथवा होने वाली बातें। अपने खुद के सामान्य दैनिक जीवन की चर्चायें बहुत- ही कम की जाती हैं। ऐसा क्यों है? ✱ सहज- सामान्य को ओझल करना और असामान्य को उभारना ऊँच- नीच वाली समाज व्यवस्थाओं के आधार- स्तम्भों में लगता है। घटनायें और घटनाओं की रचना सिर- माथों पर बैठों की जीवनक्रिया है। विगत में भाण्ड- भाट- चारण- कलाकार लोग प्रभुओं के माफिक रंग- रोगन से सामान्य को असामान्य प्रस्तुत करते थे। छुटपुट घटनाओं को महाघटनाओं में बदल कर अमर कृतियों के स्वप्न देखे जाते थे। आज घटना- उद्योग के इर्दगिर्द विभिन्न कोटियों के विशेषज्ञों की कतारें लगी हैं। सिर- माथों वाले पिरामिडों के ताने- बाने का प्रभाव है और यह एक कारण है कि हम स्वयं के बारे में भी घटना- रूपी बातें करते हैं। ✱ बातों के सतही, छिछली होने का कारण ऊँच- नीच वाली समाज व्यवस्था में व्यक्ति की स्थिति गौण होना लगता है। वर्तमान समाज में व्यक्ति इस कदर गौण हो गई है कि व्यक्ति का होना अथवा नहीं होना बराबर जैसा लगने लगा है। खुद को तीसमारखाँ प्रस्तुत करने, दूसरे को उन्नीस दिखाने की महामारी का यह एक कारण लगता है। ✱ और, अपना सामान्य दैनिक जीवन हमें आमतौर पर इतना नीरस लगता है कि इसकी चर्चा स्वयं को ही अरुचिकर लगती है। सुनने वालों के लिये अक्सर "नया कुछ" नहीं होता इन बातों में। ✱ हमें लगता है कि अपने- अपने सामान्य दैनिक जीवन को "अनदेखा करने की आदत" के पार जा कर हम देखना शुरू करेंगे तो बोझिल- उबाऊ- नीरस के दर्शन तो हमें होंगे ही, लेकिन यह ऊँच- नीच के स्तम्भों के रंग- रोगन को भी नोच देगा। तथा, अपने सामान्य दैनिक जीवन की चर्चा और अन्यों के सामान्य दैनिक जीवन की बातें सुनना सिर- माथों से बने स्तम्भों को डगमग कर देंगे। ✱ कपड़े बदलने के क्षणों में भी हमारे मन- मस्तिष्क में अक्सर कितना- कुछ होता है! लेकिन यहाँ हम बहुत- ही खुरदरे ढँग से आरम्भ कर पा रहे हैं। मित्रों के सामान्य दैनिक जीवन की झलक जारी है।

✱ **42 वर्षीया महिला कर्मचारी:** मैं बीस वर्ष से केन्द्र सरकार की नौकरी में हूँ। इस से पहले मैंने 5 साल अन्य नौकरियाँ की। दो पैसे के लिये ट्युशन तो मैं जब आठवीं में थी तभी से पढाने लगी थी। ग्यारहवीं करते ही मैं फैक्ट्री में लग गई थी। मैंने हिन्दुस्तान सिरिंज, एस्कोर्ट्स 1 प्लान्ट, यूनिमैक्स लैब, बेलमोन्ट रबड़ और स्टेडकेम फैक्ट्रियों में नौकरी की। फैक्ट्रियों में काम करने के संग- संग मैंने पत्राचार से पढ़ाई जारी रखी और बी. कॉम. पूरी की। फिर मैं एक विद्यालय में शिक्षिका लगी और वहाँ पढाने के दौरान मेरी केन्द्र सरकार में नौकरी लगी।

मेरे पति भी सरकारी नौकरी में हैं और हमारे एक लड़का है। बोर्ड परीक्षा के कारण आजकल लड़के का स्कूल नहीं लगता और मेरी तबीयत भी ठीक नहीं रहती इसलिये सुबह देर से उठती हूँ – 6.45- 7 बजे। सात- आठ साल से साँस की तकलीफ है और इधर वर्ष- भर से एक बड़ा ऑपरेशन टला है, टाला है।

सरकारी नौकरी में भी बरसों सुबह 5 बजे उठना सामान्य रहा है। नाश्ता और दोपहर का भोजन बना कर लड़के को 7 बजे के स्कूल भेजना। फ्रिज ने रात को ही आटा गूँथना और सब्जी काटना करवा कर उठना 5 की जगह साढे पाँच बजे कर दिया। बेटे को तैयार कर, झाड़ू- पोंछा व बर्तन साफ कर ड्युटी के लिये तैयार होती थी। धूल से बढती साँस की तकलीफ के कारण इधर तीन साल से घरों में काम करने वाली एक महिला झाड़ू- पोंछा करती है।

सोते- जागते हर समय ड्युटी की बात दिमाग में रहती है। सुबह उठने को मन नहीं करता पर उठना ही पड़ता है क्योंकि ड्युटी जाना होता है। दूध ला कर सुबह पति चाय बनाते हैं। मैं फिर नाश्ता और दोपहर का भोजन बनाती हूँ। तैयार हो कर पौने नो बजे दफ्तर के लिये निकल ही जाती हूँ। नौकरी तो नौकरी है – इसमें इच्छा वाली बात तो रहती ही नहीं। घर में कोई परेशानी हो चाहे स्वयं ठीक नहीं हो, ड्युटी तो पहुँचना होता है।

ड्युटी 9 से साढे पाँच बजे है। सबसे पहले तो हाजरी लगाने का रहता है। फिर अपना काम शुरू करना और उसी में लगे रहना। पहले पब्लिक डीलिंग थी, बीमारी के कारण अब तो मेरा सिर्फ टेबल वर्क है। इस से समय थोड़ा इधर- उधर कर सकती हूँ। इतना है कि आज मन नहीं है तो कल कर लेंगे पर ज्यादा नहीं टाल सकती।

दफ्तर में चाय पर कोई बन्दिश नहीं है, जब चाहो मँगा लो पर मेरी चाय पीने की आदत नहीं है। दोपहर का भोजन एक से डेढ और उस समय महिलायें व पुरुष अलग- अलग बैठते हैं। ऐसा ढर्रा बना हुआ है। महिला रैस्ट रूम में हम बच्चों की, घर- परिवार की, महँगाई की बातें करती हैं – कोई भजन सुना देती है। लेकिन हम में से 80 प्रतिशत 20 मिनट कमर सीधी करती हैं, झपकी भी ले लेती हैं। इन बीस वर्षों में महिला कर्मचारी के नाते मुझे कोई दिक्कत नहीं आई है। अब तो दफ्तर में हम कई महिलायें हैं पर मैं पब्लिक डीलिंग में रही हूँ और उस समय पुरुष सहकर्मियों के बीच अक्सर मैं अकेली महिला रही हूँ। परेशानी की बजाय महिला के नाते कई जगह तो मुझे विशेष ध्यान मिला है।

डेढ बजे से फिर टेबल वर्क जो कि साढे पाँच तक चलता है। सारे दिन कुर्सी पर बैठने से और काम से थकावट हो जाती है। दफ्तर से सीधी घर आती हूँ। थकी- हारी को पति चाय पिलाते हैं। मैं रात का खाना बनाने तथा सुबह के भोजन की तैयारी में लगती हूँ। खाना खा कर दस बजे तक फारिग हो जाते हैं और फिर टी.वी.।

बचपन से ही समय ही नहीं मिला कि कोई रुचियाँ विकसित हो सकें। सब कुछ ढर्रे में इस कदर बन्ध गया है कि ज्यादा छुट्टियाँ हो जाती हैं तब पता ही नहीं चलता कि क्या करें – एक- दो दिन की छुट्टी में तो घर के बकाया पड़े काम ही निपट पाते हैं।

कोशिश रही है कि बेटे को हमारे जैसी परेशानियाँ नहीं हों। हम बहुत- ही सादा जीवन व्यतीत करते हैं। हम पति- पत्नी दोनों सरकारी नौकरी करते हैं और हमारे एक ही लड़का है लेकिन फिर भी हम पर कर्ज है। बेटे की बोर्ड परीक्षा से भी ज्यादा चिन्ता हमें उसके आगे दाखिले की है। सीट के **(बाकी पेज तीन पर)**

खतों से-पत्रों से

✱ ....झाँसी डिविजन जल संस्थान का गठन 1975 में हुआ। तभी से सीधी भर्ती नहीं हुई। पिछले कुछ वर्षों से पम्प ऑपरेटर्स के स्थाई पदों पर भी ठेकेदारों द्वारा पम्प ऑपरेटर रखे जा रहे हैं। 16-18 घंण्टे ड्युटी ले कर मात्र 950-1000 रुपया मासिक वेतन दिया जाता है और वह भी 7-8 माह बीतने पर 2-3 माह का दिया जाता है। यदि कोई शिकायत करे तो निकाल दिया जाता है। जो स्थाई कर्मी हैं उन्हें भी साप्ताहिक अवकाश के दिन काम करना पड़ता है एवं मात्र 15 रुपया प्रतिदिन के हिसाब से 75 रुपये मासिक मिलते हैं जबकि उनका एक दिन का वेतन 180रु. से कम नहीं होता है जिसका दूना मिलना चाहिये। — 'रहमान' रब्बानी, कालपी

✱ मैं एम.ए. प्रथम श्रेणी से पास हूँ। पत्रकारिता में डिप्लोमा कोर्स भी कियां है। 1990 में सिविल कोर्ट में चतुर्थ वर्गीय श्रेणी में इस उम्मीद से बहाल हो गया था कि 3 वर्षों के बाद तृतीय श्रेणी में प्रोन्नति हो जायेगी। पर आज तक नहीं हुई। मुझ से कम पढे-लिखे लोग धौंस जमाते हैं। मेरा दम घुटता है। बीबी, बच्चे, माँ-बाप का भार मुझे इस अर्द्ध बेरोजगारी के जुए में जोते जा रहा है।

जब से झारखण्ड बँट कर अलग हुआ है महंगाई भत्ता, क्षेत्रीय भत्ता, बोनस सहित तमाम श्रमिक सुविधाएं बन्द कर दी गई। एक छोटे से घर के सपने ने लाखों रुपये के कर्जे में डुबा दिया है। फिर भी घर में चौखट-किवाड नहीं लग पाई। ... आधा से ज्यादा वेतन कर्जे की किस्तों में चला जाता है। घर चलाना मुश्किल हो गया है। क्या करूँ? समझ में नहीं आता।

सारे जहान के लोगों को न्याय देने का वायदा करने वाली भारतीय न्यायपालिका में कैसे अपने ही कर्मचारियों के साथ अन्याय हो रहा है— इसे देखने वाला कोई-नहीं।....

— संजीव कुमार, समस्तीपुर

✱ ... पढी-लिखी सामान्य परिवार की लड़की थी। शादी के बाद छोटे-से कस्बे में आई। पति की कोई विशेष आकांक्षा न थी। जिला मुख्यालय पर तबादला हुआ। अपना मकान बनवाने की सोची, मुझ को नौकरी दिलाई। दो बच्चे हुये, मकान बना, पति की पदोन्नति ग्रामीण इलाके में हुई। धन की आवक बढने से विरोधी बढे। पति के साथ दुर्घटना हुई और 3-4 माह में बहुत खर्च हुआ।

अब पति को वहाँ से हटा कर, प्रमोशन दे कर विपरीत दिशा में भेज दिया गया है। मैं ग्रामीण क्षेत्र में साढे दस से साढे चार बजे तक स्कूल में पढाती हूँ। तीन सौ बच्चे और हम दो शिक्षक हैं — एक तो जिला कार्यालय में समय-समय पर काम करता है। मेरी दिनचर्या इस तरह है :— प्रातः 6 के करीब नींद खुलती है। बच्चों को उठाना, उन्हें तैयार कर स्कूल भेजना, परिवार के लिये भोजन बनाना, साढे नो तक सभी काम निपटा कर बस पकड़ना, दिन-भर बच्चों से उलझना, महिलाओं को पढने के फायदे बताना। फिर 5 बजे तक बस का इन्तजार करना। शाम को घर लौट कर बच्चों की शिकायतें सुनना, उनको गृहकार्य कराना, और शाम का भोजन आदि सब काम निपटाते-निपटाते रात्रि के साढे दस बज जाते हैं। सब कामों में लगे रहने पर भी पति जल्दी-जल्दी मचाते रहते हैं। कभी सोचती हूँ कि नौकरी छोड़ दी जाये पर तब सवाल उठता है कि मकान का कर्ज और बच्चों की फीस कहाँ से देंगे। —रवीन्द्र, गुना

✱ .... एक आत्मकथ्य प्रेषित है — "मैं, मुरारी, राजस्थान के बारां जिले के शाहबाद क्षेत्र की मामोनी पँचायत का निवासी हूँ। अकाल के कारण काम नहीं मिलने से जंगल से असगंध खोद कर, छाया में सुखा कर, छील कर बेचने का काम करता था। इससे 4-6 रुपया की आमदनी होती थी। मेरे बीमार पड़ने के कारण यह आमद भी बन्द हो गई। मेरे माता-पिता, पत्नी व पुत्री मुझ पर ही निर्भर थे। अन्न का एक दाना घर में नहीं था। सांवा (जंगली घास का बीज) की लापसी या रोटी तथा पुवाड़ (जंगली बरसाती पौधा) के पत्तों को उबाल कर पेट भरते थे। मेरी बीमारी की स्थिति में पहले मेरे पिताजी फौत (मृत्यु) हुये, आठ-दस दिन बाद मेरी पत्नी चल बसी, इसके दस-बारह दिन बाद मेरी बच्ची व बाद में माँ की मृत्यु हो गई। मेरे गाँव व आसपास के गाँवों में हम सहरियों की भूखमरी व बेरोजगारी की कमोबेश यही हालत है। बात फूटने पर थानेदार के साथ सरकार के बड़े अफसर आये तथा मुझे मुँह बन्द रखने को कहा। पँचायत से 5 किलो गेहूँ मुझे दिलाये।"

— कन्हैयालाल, केबलनगर, कोटा

✱ .... गाँवों में कँगाली बाँट कर मजदूरों की सँख्या में बढोतरी की गई ताकि स्थापित हो रहे कल-कारखानों, उद्योगों के लिये सस्ते में मजदूर मिल सकें।.... कँगाली में.... जीविकोपार्जन हेतु शहरों का रुख किया तो शहरों में आबादी का दबाव बढा। मतलब यह कि माँग कम, आपूर्ति ज्यादा हुई जिससे मजदूरों के अत्याधिक शोषण की प्रवृति में भी इजाफा हुआ।...

— शिवदत्त, बाघा, बाँदा

✱ .... उद्योग धन्धे के जरिये तन भूखा, मन भूखा... जिस पर सरकार गर्व से कहती है कि उत्पादन बढा है और उद्योग धन्धों से देश विकसित राष्ट्रों की श्रेणी में.... किशोरी माँ पौ फूटने के साथ घर का काम निपटा फैक्ट्री की ओर तथा नवजात शिशु माँ के दूध से वंचित... कितना कहर ढाया जा रहा है....

— उपेन्द्र प्रसाद, नरसिंहपुर

नौकरी-चाकरी

भारत मशीन टूल्स मजदूर: "सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में मैनेजिंग डायरेक्टर बहुत गालियाँ देता है। बुजुर्ग मजदूरों से भी बहुत भद्दे ढँग से पेश आता है। कहता है कि बूढे हो गये हो, काम करना तुम्हारे बस का नहीं है, भाग जाओ।"

पोलीमेडिक्युअर वरकर : "प्लॉट 105 सैक्टर-59 स्थित फैक्ट्री में सूइयाँ बहुत चुभती हैं, कई बार तो उँगली अथवा हथेली के आर-पार सूई निकल जाती है। बहुत रक्त निकलता है। हफ्ते के सातों दिन काम करना पड़ता है और हर रोज हम लड़कों को 12 घण्टे तो ड्युटी करनी ही पड़ती है। ई.एस.आई. कार्ड नहीं देते। छह महीने पूरे होने पर नौकरी से निकाल देते हैं।"

ब्रॉन लैबोरेट्री मजदूर : "इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में ड्युटी के लिये सुबह 5 बजे उठना पड़ता है और महीने में कई दिन फैक्ट्री गेट से यह कह कर लौटा देते हैं कि आज काम नहीं है। कम्पनी पहले सूचना नहीं देती, मुफ्त में दौड़ाती है। तनखा देरी से — जनवरी का वेतन आज 20 फरवरी को दिया है। तनखा में से 10-20-50 रुपये वैसे ही काट लेते हैं, खा जाते हैं। ई.एस.आई. कार्ड नहीं देते।"

स्टार वायर वरकर : "मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में भर्ती ठेकेदारों के जरिये है और 52 ठेकेदार हैं। पाँच-दस मजदूर वाले ठेकेदार भी हैं पर मेरे वाले ठेकेदार के जरिये कम्पनी ने 280 वरकर रखे हैं। हर रोज 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं और महीने के तीसों दिन 12 घण्टे ड्युटी के बदले में हमें 2500 रुपये देते हैं। ई.एस.आई. कार्ड नहीं, प्रोविडेन्ट फण्ड नहीं।"

हिन्दुस्तान वायर्स मजदूर: "प्लॉट 267-268 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में कम्पनी ने अचानक 7 फरवरी को तालाबन्दी कर दी। पहले यहाँ 336 परमानेन्ट मजदूर थे जिनमें से अब 182 ही बचे हैं। फैक्ट्री में बन्द किये प्लान्ट के मैनेजरों को अब भी 60-70 हजार रुपये महीना कम्पनी देती है। परन्तु हम 2200-2500 रुपये महीने में काम करने वालों को कम्पनी भारी बोझ बता रही है। अब हमें भी नौकरी से निकालने के लिये यह तालाबन्दी की गई है।" ■

रजिस्ट्रेशन ऑफ न्यूज पेपर सेंटर रूल्स 1956 के अनुसार स्वामित्व व अन्य विवरण का ब्यौरा फार्म नं. 4 (रूल नं. 8)

फरीदाबाद मजदूर समाचार

1. प्रकाशन का स्थान	मजदूर लाइब्रेरी आटोपिन झुग्गी, फरीदाबाद-121001
2. प्रकाशन अवधि	मासिक
3. मुद्रक का नाम	शेर सिंह (क्या भारत का नागरिक है? हाँ)
4. प्रकाशक का नाम	शेर सिंह (क्या भारत का नागरिक है? हाँ)
5. संपादक का नाम	शेर सिंह (क्या भारत का नागरिक है? हाँ)

6. उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझदार हों। केवल शेर सिंह

मैं, शेर सिंह, एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

दिनाँक 1 मार्च 2003 हस्ताक्षर शेर सिंह प्रकाशक

आप-हम क्या-क्या करते हैं..... (पेज एक का शेष)

लिये भुगतान करना पड़ा तो कैसे होगा? कर्ज लेने का मतलब होगा हम दोनों द्वारा पूरी जिन्दगी कर्ज उतारने के लिये कमाना। और फिर मेरा ऑपरेशन! समस्या है और मैं उसे समस्या मानती हूँ जिसके समाधान का रास्ता न सूझे।

समस्याओं में ही जीवन बीता है इसलिये रोजमर्रा की समस्याओं को तो मैं समस्या ही नहीं मानती। अपने स्वास्थ्य की परवाह नहीं की – नौकरी के दौरान मैंने ज्यादा काम किया है और छुट्टी के दिन भी आराम करने के बजाय घर के काम निपटाती रही। इन वजहों से शायद मानसिक दबाव ज्यादा रहा है और इस वक्त तो कुल मिला कर यह है कि मैं अपनी सेहत से ही परेशान हूँ।

बचपन से ही अपनों - दूसरों की मदद करना अच्छा लगता है। क्यों अच्छा लगता है इसका कारण मुझे नहीं मालूम। कुर्सी पर बैठे कागज काले करने की बजाय मुझे लोगों से जीवन्त सम्बन्ध अच्छे लगते हैं। यह स्वभाव-सा रहा है कि किसी के काम को रोकना नहीं है, मेरे कारण कोई परेशान नहीं हो। इतने वर्ष की नौकरी में यह इच्छा कभी मन में नहीं आई कि मैं जिनका काम कर रही हूँ वे बदले में मुझे कुछ दें। बीस वर्ष में किसी से उसका काम करने के बदले में एक पैसा नहीं लिया है। और, इस सब में मुझे बहुत सन्तुष्टि मिली है। लेकिन पब्लिक डीलिंग में बहुत ऊर्जा चाहिये – बहुत ज्यादा बातें तो करनी ही पड़ती हैं, कई ऐसे भी मिल जाते हैं जो मानते ही नहीं कि मैं उनका काम करना चाहती हूँ और ऐसे में तनाव हो जाता है। बीमारी के कारण अब मैं टेबल वर्क करती हूँ और यहाँ भी मैं अपने कारण किसी को परेशान होते नहीं देख सकती। लेकिन सरकार तो स्वयं ही समस्या है...

★ 24 वर्षीय कैजुअल वरकर: मैं 1997 में पहली बार फरीदाबाद आया था। ठेकेदार के जरिये पहले - पहल आटोपिन फैक्ट्री में लगा था। पहले महीने मैंने 13 - 14 दिन 16 - 16 घण्टे काम किया। मैंने 9 महीने आटोपिन फैक्ट्री में काम किया तथा बाद के महीनों में 6 - 7 - 8 दिन 16 - 16 घण्टे काम किया। फिर एक अन्य ठेकेदार के जरिये मैं टालब्रोस फैक्ट्री में लगा। यहाँ भी महीने में 6 दिन तो 16 - 16 घण्टे काम करने को मजबूर करते ही थे। सर्दियों में आने - जाने में बहुत दिक्कत होती थी – कुहासे में रेलवे फाटक पर और मथुरा रोड पर 3 - 4 एक्सीडेन्टों में खूनखच्चर देख कर मेरा मन खराब हो गया। ठण्ड में रात की ड्युटी और एक्सीडेन्टों के दृष्टिगत मैंने 4 महीने काम करने के बाद टालब्रोस में नौकरी छोड़ दी। फिर एक जान - पहचान वाले के जरिये मैं अनिल रबड फैक्ट्री में लगा। यहाँ पहली बार ऐसा हुआ कि भर्ती के समय मुझ से कोरे कागज पर हस्ताक्षर करवाये गये। यह भी सुना कि भर्ती के लिये अधिकारी 200 रुपये रिश्वत लेते हैं। अनिल रबड में महीने में 4 दिन ही 16 - 16 घण्टे काम किया। छह महीने बाद अनिल रबड़ में ब्रेक देने के बाद मैं एक्सप्रो फैक्ट्री में लगा। यहाँ महीने में 5 दिन 16 - 16 घण्टे काम करना पड़ता था – 12 घण्टे बाद छोड़ने का तो सवाल ही नहीं था। एक्सप्रो में काम करने के दौरान मैंने आई.टी.आई. के बारे में सुना। छह महीने बाद एक्सप्रो में ब्रेक देने पर जून 99 में मैं गाँव चला गया। उस साल आई.टी.आई. में दाखिला नहीं हो पाया, सन् 2000 में हुआ। जुलाई 2002 में आई.टी.आई. कर मैं लौटा हूँ और अब ओसवाल इलेक्ट्रिकल्स में कैजुअल वरकर हूँ।

इस समय मेरी रात की शिफ्ट है। फैक्ट्री में तो बस लैट्रीन जाता हूँ। पैदल कमरे पर आता हूँ। हाथ - मुँह धो कर स्नान करता हूँ। चाय नहीं पीता। तब तक 9 बज जाते हैं और नाश्ते के लिये रोटी व आलू या मटर या गोभी की भुजिया बनाता हूँ। कभी - कभी ज्यादा थकान होती है तब सीधे भोजन बनाता हूँ – चावल, दाल के संग कुछ और। सामान्य तौर पर मैं 11 बजे सो जाता हूँ और शाम को साढे चार - पौने पाँच बजे उठता हूँ। नाश्ता करके सो गया तो दोपहर का खाना गायब। हाथ - मुँह धो कर सब्जी मण्डी जाता हूँ और वहाँ हल्का नाश्ता करता हूँ – अधिकतम 5 रुपये का। पाँच रुपये की सब्जी लेता हूँ और लौट कर बाल काटने की दुकान पर एक - डेढ घण्टे अखबार पढता हूँ। फिर कमरे पर एक - दो घण्टे पढाई करता हूँ – सामान्य ज्ञान, सामान्य विज्ञान, रेफ्रिजरेशन के अपने विषय से सम्बन्धित। रात नो - साढे नो तक भोजन बना लेता हूँ और खाने के बाद एक घण्टा आराम कर ड्युटी के लिये चल देता हूँ।

जाते ही फैक्ट्री गेट पर हाजरी। विभाग में सुपरवाइजर काम बताता है और दस्ताने व पेन्सिल इश्यु करता है। तीन ऑपरेटरों का उत्पादन मुझे चेक करना पड़ता है– कहीं दरार, कहीं गड्ढे, कहीं बगल में नुक्स... ऑपरेटरों का दबाव रहता है कि रिजेक्ट कम करूँ और नौकरी का दायित्व है कि हिसाब से काम करूँ। यह काम पूरी रात लगातार चलता है, सुबह साढे सात बजे तक। ओसवाल इलेक्ट्रिकल्स में रात की शिफ्ट में कोई लन्च ब्रेक नहीं, कोई चाय ब्रेक नहीं– लगातार 8 घण्टे काम! नींद का सवाल ही नहीं। मैटेरियल खराब हुआ तो 10 - 15 मिनट भी नहीं निकलते, माल का ढेर लग जाता है। मैटेरियल ठीक होता है तो दस - पाँच मिनट आराम मिलता है और इसी में टट्टी - पेशाब करते हैं अन्यथा साढे सात बजे शिफ्ट छूटने पर ही।

ओसवाल इलेक्ट्रिकल्स फैक्ट्री में 500 मजदूर काम करते हैं परन्तु कैन्टीन नहीं है। चाय पीने बाहर नहीं जा सकते, प्रतिबन्ध है। दो - चार मिल कर, सुपरवाइजर से गेट पास के जरिये एक बन्दे को भेज कर रात - भर खुली रहती ईस्ट इण्डिया चौक की दुकानों से चाय मँगवाते हैं। सुपरवाइजर भी चाय पीने बाहर नहीं जा सकते। यही हाल टालब्रोस फैक्ट्री में भी रात की शिफ्ट में था – कोई लन्च ब्रेक नहीं, कोई चाय ब्रेक नहीं और कैन्टीन थी पर वह रात में बन्द रहती थी।

सप्ताह में शिफ्ट बदलती है। पिछले हफ्ते सुबह की शिफ्ट में था। तब सुबह 5 बजे उठता। लैट्रीन बाहर खुले में जाना। फिर नाश्ता - भोजन बनाना – 2 रोटी खाना और 4 बाँध लेना। सर्दी में सुबह नहाता नहीं। सुबह साढे सात से फैक्ट्री में रात की ही तरह काम। हाँ, दिन की शिफ्ट में साढे ग्यारह से बारह बजे लन्च होता है।

साढे तीन बजे छूट कर सीधा कमरे पर आना और पानी ला कर स्नान करना – सप्लाई का पानी ज्यादा ठण्डा नहीं होता। कुछ बचा हो तो नाश्ता करना अन्यथा कुछ बनाना। फ़ारिग हो कर शाम की हवा खाने निकलना। एक नम्बर में एक पुस्तकालय में एक घण्टे 4 - 5 हिन्दी - अंग्रेजी के अखबार पलट कर 7 बजे लौटना और फिर 1 - 2 घण्टे अपने विषय की पुस्तकें पढना। रात 9 बजे भोजन बना, खा - पी कर रात 11 बजे सो जाना।

अभी 15 दिन से सब काम खुद करना पड़ता है। पहले एक परिचित के परिवार को 600 रुपये महीना खुराकी के देता था।

सबसे ज्यादा गड़बड़ बी - शिफ्ट होती है। अब तो इसे भी अकेले ही भुगतना पड़ेगा। बी - शिफ्ट में फैक्ट्री से रात 12 बजे कमरे पर लौटता हूँ। नो बजे का बना ठण्डा खाना इतनी रात गले उतरता नहीं और आहिस्ता - आहिस्ता खाने में एक बज जाता। फिर रात 2 बजे तक नींद नहीं आती। सुबह सात - साढे सात नींद खुलती है और देर के कारण खुले में लैट्रीन जाने में अतिरिक्त परेशानी। स्नान करते - करते 10 बज जाते हैं। नाश्ते के बाद तबीयत भारी हो जाती है और एक - डेढ घण्टे सो जाता हूँ। उठ कर साढे बारह - एक बजे भोजन और फिर ऐसे ही समय काटना। बी - शिफ्ट में अपना सब कुछ गड़बड़ा जाता है। शारीरिक क्षमता एकदम ढीली पड़ जाती है। यह सुस्ती साढे चार - पाँच बजे तक रहती है – ड्युटी करते घण्टा हो जाता है तब शरीर चुस्त होता है। बी - शिफ्ट में घूमना - पढ़ना सब बन्द हो जाता है।

मुझे बहुत ज्यादा अखरता है: फैक्ट्री में रहना, सुपरवाइजर का ज्यादा नुक्स निकालना और अतिरिक्त उपदेश देना। सहकर्मी पूछने पर बताने से इनकार करते हैं, उल्टा - सीधा जवाब देते हैं, अपने बारे में बढा - चढा कर बताते हैं तब मुझे बुरा लगता है। अफसरों का तो बोलने का ढँग ही निराला है – वो लोग हमें इन्सान नहीं समझते, सी एन सी मशीन से भी तेज रफ्तार से हम से काम लेना चाहते हैं।

बाहर भी समस्या ही समस्या है। पानी के (बाकी पेज चार पर)

एस्कोर्ट्स

एस्कोर्ट्स मजदूर : " फार्मट्रैक प्लान्ट में दिसम्बर से फिर काम ढीला- ढाला चल रहा है। हमारी डिपार्ट में तो इन 10- 12 दिन से बैठ के आते हैं – कच्चा माल ही नहीं है। कैजुअल वरकरों की कम्पनी ने बहुत ही दुर्गत कर रखी है। पाँच- छह सौ भर्ती कर लेते हैं जबकि परमानेन्ट खाली बैठे होते हैं। उन्हें हफ्ते बाद भी ब्रेक दे देते हैं। हम लोगों ने एतराज किया और मैनेजरों से कहा कि 6 महीने नहीं तो कम से कम 2 महीने तो उन्हें लगातार रखो। साहबों का जवाब होता है कि काम नहीं है.... नोटिस लगाया कि 3 मार्च तक कोई कैजुअल ड्युटी नहीं आयेगा, 3 तारीख को पता कर लें। आज कैजुअल पता करने आये थे और कम्पनी ने उन्हें फिर वापस भेज दिए। एग्री मशीनरी ग्रुप में 9 महीने में 72 करोड़ रुपये घाटे का जो नोटिस कम्पनी ने लगाया है वह दुख में सिमरन करने वाली बात है। प्लान्ट में चर्चा है कि ट्रैक्टर डिविजन से कम्पनी 1600- 1700 मजदूरों की छँटनी करना चाहती है। इधर लीडर कार्ड पंच नहीं कर रहे और इस पर मैनेजमेन्ट उन्हें तनखा नहीं दे रही – प्लान्ट में काम नहीं है, ऐसे में खामखाह पँगा लेने वाली बात है। एक- डेढ महीने पहले कैन्टीन ठेकेदार बदला है पर और कोई बात वहाँ नहीं है। लीडरों के बीच बढती ग्रुपबाजी व झगड़े पर मजदूरों की टोका-टोकी बढी कि लीडरों की लड़ाई हमारा सत्यानाश कर देगी, तब जा कर मामला ठण्डा पड़ा, महीने- भर से ठण्डा ही है।

" थर्ड प्लान्ट में उत्पादन बहुत- ही ढीला- ढाला है। एग्री मशीनरी ग्रुप में से 102 सुपरवाइजरों- मैनेजरों को नौकरी से निकालने में जोर- जबरदस्ती हुई है पर मजदूरों के साथ नहीं ..... कम्पनी 1600- 1700 मजदूरों को फालतू बता रही है पर छँटनी नहीं होगी। इन 5 वर्ष में एग्री मशीनरी ग्रुप में 5500- 6000 परमानेन्ट मजदूरों को वीआरएस, रिटायरमेन्ट, मृत्यु के जरिये 4600- 4700 करने में कम्पनी सफल रही है और इसी तरह सँख्या को 3000 पर ले आयेगी। छँटनी की बातें एग्रीमेन्ट से ध्यान हटाने के लिये हैं। नई इमारतों, नई मशीनों, नये सिरे से मशीनों की स्थापना, नई कम्प्युटर प्रणाली में कम्पनी ने भारी मात्रा में पैसे लगाये हैं और पिछली एग्रीमेन्ट भी उनके मुताबिक कर आधे मजदूर फालतू हुये। एग्री मशीनरी ग्रुप का प्रमुख कह रहा था कि ऐसा नहीं करते तो कम्पनी बन्द हो जाती। भारत में ट्रैक्टर मण्डी में यह मन्दी का दौर है। नो महीने में 72 करोड़ रुपये का घाटा हुआ है पर तैयारी ऐसी है कि कम्पनी प्रतियोगिता में आगे रहेगी। कार्ड पंचिग कुछ लीडर नहीं कर रहे और कुछ लीडर कर रहे हैं। लेकिन वरकर कम करने की बात कम्पनी यूनियन से सहमति के बिना नहीं करेगी – ठीकरा किसके सिर पर फूटे वाली बात भी है। वैसे, मैनेजमेन्ट और यूनियन जब चाहें हड़ताल करवा सकती हैं।

" 7 फरवरी को कम्पनी ने नोटिस लगाया कि 9 महीने में एग्री मशीनरी ग्रुप में 71 करोड़ 32 लाख रुपये का घाटा हुआ है। फस्ट प्लान्ट में इस पर मजदूरों की टिप्पणी थी : जब मुनाफा होता था तब तो कम्पनी ने कभी भी सरक्युलर लगा कर नहीं बताया कि कितना मुनाफा हुआ है। घाटे के नोटिस में जिस रिपोर्ट को प्रदर्शित करने का जिक्र है वह कम्पनी ने प्रदर्शित नहीं की। फस्ट प्लान्ट में काम ढीला है, दो की बजाय हम एक ही शिफ्ट में जाते हैं। मुख्य चर्चा छँटनी की है। घाटे का नोटिस कम्पनी ने डर फैलाने के लिये लगाया है। वी.आर.एस. पर वी.आर.एस. के बाद भी कम्पनी अनुसार एग्री मशीनरी ग्रुप में अभी भी 1600- 1700 मजदूर फालतू हैं। एग्रीमेन्ट और छँटनी गुँथे हुये हैं। लीडरों के गुटों में उठा- पटक और गुटों की मीटिंगों वाली गर्मी आजकल नहीं है। गुट तब जा कर ठण्डे पड़े जब इनके पट्ठों को जगह- जगह यह सुनना पड़ा कि तुम लोग आपस में लड़ कर हमारा सत्यानाश करोगे। प्लान्ट में अंट- शंट क्षेत्रवाद का सरक्युलर लगाने वालों को ही खुद उसे उतारना पड़ा। फस्ट प्लान्ट में कैन्टीन का लफड़ा तैयार है। ठेकेदार भाग गया है। आजकल परसनल का पूरा स्टाफ कैन्टीन चलाने में लगा है। इसके साथ ही लीडरों द्वारा कार्ड पंच नहीं करना और इस पर कम्पनी द्वारा उन्हें तनखा नहीं देना ऐसा नासूर है जिसे कभी भी पहाड़ बनाया जा सकता है। लेकिन एस्कोर्ट्स मैनेजमेन्ट बहुत काँइयाँ है इसलिये छँटनी के लिये सहमति की कोशिशों में लगी है। लगता है कि कम्पनी से वादा किया गया है कि आराम से 1600- 1700 मजदूरों को निकलवा दिया जायेगा। लेकिन ऐसे वादों को अब तक तो हम ने नेताओं वाले वादे ही रखा है।"

आप-हम क्या-क्या करते हैं....(पेज तीन का शेष)

लिये, डाकखाने में, रेलवे स्टेशन पर ... सब जगह लाइन ही लाइन। मुझे बहुत अखरती है लाइन। यहाँ फिलहाल कोई दोस्त नहीं है, टेम्परेरी जैसे हैं – थोड़ी जान-पहचान, थोड़ी बोलचाल। कभी- कभी बहुत अकेलापन महसूस होता है।

उत्सुकता वाला काम, घूमना, जानकारियाँ लेना मुझे अच्छे लगते हैं। लेकिन इस जमाने में ये कहाँ ... (जारी)

मेरठ से–

★ नीलामी नौटंकी : मोदीपुरम, मेरठ स्थित मोदी टायर फैक्ट्री के मजदूरों के कम्पनी पर बकाया 93 लाख रुपये के लिये प्रशासन ने 17 जनवरी और फिर 3 फरवरी को नीलामी की कसरत की। पहले दिन, 17 जनवरी को प्रशासन ने जो शर्तें सुनाई वे ऐसी थी कि बोली लगाने वाले सहमत नहीं हुये और नीलामी कार्यक्रम स्थगित हो गया। फिर 3 फरवरी को शर्तों पर सहमति हुई। बिक्री हेतु सम्पत्ति की कीमत प्रशासन ने 20 लाख रुपये सुनाई। दिल्ली से आये एक ने 18 लाख 10 हजार रुपये की अधिकतम बोली लगाई परन्तु प्रशासन ने तदनुरूप कदम नहीं उठाया और बाद में प्रचार किया कि वह अपनी बोली वापस ल कर चला गया। कोई नीलामी नहीं हुई।

मोदी टायर मैनेजमेन्ट ने नीलामी की कार्रवाई को अवैद्यानिक कहा है। कम्पनी अनुसार कुर्क सम्पत्ति का सही मूल्यांकन नहीं हुआ है – गोदाम की सम्पत्ति का मूल्य 68 लाख रुपये है परन्तु प्रशासन ने उसका मूल्य 20 लाख रुपये आँका है। मोदी टायर मैनेजमेन्ट ने कहा है कि नीलाम की जाने वाली सम्पत्ति का सही विवरण छोटे- बड़े अखबारों में विज्ञापनों के जरिये प्रचारित नहीं किया गया है। कम्पनी ने यह भी कहा है कि फैक्ट्री की तमाम चल- अचल सम्पत्ति की बिक्री पर स्टेट बैंक ने हाई कोर्ट से स्टे ले रखा है।

फैक्ट्री पर अभी भी प्रशासन का ताला लगा है और मोदी मैनेजमेन्ट नीलामी प्रक्रिया रोकने के लिये अदालत गई है।

★ मण्डी की भँवर: सन् 1937- 38 में मोदी वनस्पति फैक्ट्री स्थापित की गई थी। फैक्ट्री में 600 मजदूर काम करते थे। सन् 1987 में फैक्ट्री का आधुनिकीकरण किया गया – मजदूरों की छँटनी की गई और फैक्ट्री में 107 ही रह गये। फिर 1993- 94 से कम्पनी के बही- खाते निरन्तर घाटा दर्शाने लगे। मजदूरों के वेतन- भत्तों में कटौतियों का सिलसिला चला और फिर इधर कई माह से तनखायें ही नहीं दी गई। बन्दी- क्लोजर की ओर अग्रसर फैक्ट्री में अधिकारियों ने अतिरिक्त लूट भी की। अब मोदी वनस्पति फैक्ट्री के मुख्य द्वार पर मैनेजमेन्ट ने ताला लगा दिया है और नोटिस चिपकाया है कि घाटे के कारण मिल चालू रखना सम्भव नहीं है।

★ मजदूर, बनाम मजदूर: मैं 56 वर्षीया विधवा हूँ और 5 बेटियों की माँ। एक बेटी नानी के पास है, एक बेटी कपड़े की दुकान पर 1000 रुपये महीने में काम करती है और तीन पढती हैं। मैं एक छोटी- सी दुकान चलाती थी पर पूरा नहीं पड़ रहा था इसलिये 8 माह पहले ताकत की दवा बनाने वाली एक आयुर्वेदिक फैक्ट्री में लग गई। मुझे महीने के 950 रुपये देते हैं और शीशी- बोतल धोना, दवाई भरना, पैक करना मेरे काम हैं। सुबह 9 से शाम 5 बजे तक ड्युटी है। फैक्ट्री में कूलर- हीटर हैं पर बचत के लिये भोजन अवकाश के समय उन्हें बन्द कर देते हैं। हर समय काम- काम- काम – हम 4- 6 मिनट बाथरूम में न लगा दें इसलिये फैक्ट्री में यह बनाये ही नहीं हैं। तमाम गाली, फटकार सुननी पड़ती हैं। लेकिन इन सब से भी ज्यादा तकलीफ इधर हाल ही में लगी तीन नई उम्र की लड़कियों से हमें है। वे 800 रुपये महीने में लगी हैं और हर समय प्रबन्धकों की जी- हजूरी में लगी रहती हैं। हमें फटकारने, अपमानित करने के लिये प्रबन्धक उन लड़कियों का इस्तेमाल करते हैं। –नीलम

डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी,
आटोपिन झुग्गी, फरीदाबाद-121001

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे० के० आफसैट दिल्ली से मुद्रित किया। **RN 42233** पोस्टल रजिस्ट्रेशन **L/HR/FBD/73**
सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी–546 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।